8

ठुकराए गए पर आनन्दित

(मत्ती 5:10-12)

यदि मैं किसी भीड़ को सम्बोधित कर रहा हूं और सोचूं कि जिस-जिस को खुशी चाहिए वह अपने हाथ खड़े कर ले, तो सम्भवतया हर किसी का हाथ खड़ा हो जाएगा। यदि मैं पूछूं कि ''कितने सताए जाने के इच्छुक हैं ?'' बहुत कम (यदि कोई खड़ा करे भी) हाथ खड़े होंगे। तौभी मत्ती 5:10 में यीशु ने खुशी यानी प्रसन्नता को सताव के साथ जोड़ दिया। ''धन्य हैं वे जो धर्म के कारण सताए जाते हैं क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।'' फिलिप्स के अनुवाद में इसे इस प्रकार लिखा गया है। ''प्रसन्न हैं वे जिन्होंने सताव सहा है ... !'' आठवें धन्य वचन में हमें स्वाभाविक प्रभाव और परमेश्वर के हाथों में व्यक्तित्व के उत्तर में तुलना में अन्तर मिलता है। ह्यूगो मेकोर्ड ने लिखा है:

> अपने आपको सम्भालना प्रकृति का सबसे पहला नियम माना जाता है। जब आठवां धन्य वचन व्यक्ति को पकड़ लेता है तो वह व्यक्ति स्वभाव के विरुद्ध जाने को तैयार रहता है। मसीहियत अपनी सम्भाल करने के विपरीत है। जब यीशु के साथ झुकाव पूरी तरह से बढ़ जाता है, तो मसीही व्यक्ति कहता है ''मसीह की बाईं मेरी देह के द्वारा सदा होती रही है, वैसे ही अब भी हो चाहे मैं जीवित रहूं वा मर जाऊं'' (फिलिप्पियों 1:20)। वह चाबुक को ... दुर्व्यवहार नहीं बल्कि विशेष समर्थन मानता है! उसके लिए ''मसीह के कारण यह अनुग्रह हुआ, कि न केवल उस पर विश्वास करो पर उसके लिए दुख भी उठाओ'' (फिलिप्पियों 1:29)।[1]

अन्तिम धन्य वचन में हम पहले धन्य वचन में दी गई प्रतिज्ञा के पूरे चक्र में आते हैं कि ''स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।'' 5:3 में यह आशीष उन लोगों को दी गई थी जो अपनी आत्मिक कमी को मान लेते हैं। इस आयत के बाद हमें ऐसे व्यवहार और कार्य मिलते जो दीन मन होने से होते हैं। अन्त में 5:10 में हमें आत्मिक भिखारी होने की एक और अभिव्यक्ति यानी सताए जाने पर भी सकारात्मक व्यवहार रखना मिलती है।

मत्ती 5:3-12 को देखते हुए आपका ध्यान आठवें ध्यान की अलग बात पर जा सकता है। अन्य धन्य वचनों की तरह इसमें एक ही वाक्य है और वह अन्य पुरुष है।[2] पर अन्य धन्य वचनों के विपरीत इसमें अगले दो वाक्य मध्यम पुरुष में है।[3] यीशु इस धन्य वचन को सीधे अपने चेलों पर लगा रहा था। यीशु ने इस धन्य वचन को क्यों विस्तार दिया जबकि दूसरों को नहीं ? शायद वह अपने चेलों को बताना चाहता था कि उन्हें पिछले धन्य वचनों में जिस स्वभाव की रूप रेखा दी गई है वैसा स्वभाव बन जाने पर संसार से क्या उम्मीद रखनी चाहिए। हो सकता है कि उसने अपने विचार को इसलिए विस्तार दिया, क्योंकि उसे समझ थी कि उसके चेलों के लिए सताव

में किसी आशीष को देखना कितना कठिन होगा।

यह धन्य वचन एक आयत में न होकर तीन आयतों में है और इसमें सामान्य दो (शर्त के साथ प्रतिज्ञा) के बजाय विभिन्न विचार हैं, इस कारण इस पाठ का फॉर्मेट शृंखला में दूसरे पाठों से थोड़ा अलग होगा।

सताव आवश्यक है

हमारे वचन पाठ में यीशु ने दो संदेश देने चाहे। पहला यह है कि सताव सुनिश्चित है। यीशु नहीं चाहता था कि उसके चेलों को सताव आश्चर्य लगे; वह उन्हें इसके लिए तैयार करना चाहता था। अपनी मृत्यु से थोड़ा पहले उसने प्रेरितों को बताया था, ''दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं होता, उसको याद रखो: यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे ...'' (यूहन्ना 15:20)।

सताव की बात करके यीशु अपने चेलों को ''सताव की भावना'' देना चाहता था।[4] यह सोच रखने वाले व्यक्ति से दयनीय और कोई नहीं है जिसे लगता है कि हर कोई उसके विरुद्ध है, जो हर प्रकार के अपमान और गालियों की कल्पना करता है। यीशु तो केवल एक सच्चाई बता रहा था कि परमेश्वर का वफ़ादार बालक सताव से बच नहीं सकता। यीशु अपने चेलों को पूर्व सूचना से भरना नहीं चाहता था, पर वह उन्हें सिखाना चाहता था कि वे क्या उम्मीद रखें।

न ही यीशु यह सुझाव दे रहा था कि सताए जाना इस बात का पक्का प्रमाण है कि कोई परमेश्वर द्वारा स्वीकृत हो गया है। सताव *शिष्यता* का *प्रमाण* उतना नहीं जितना शिष्यता का *परिणाम* है। यदि मैं कहूं ''प्रसन्न हैं वे माताएं जिन्होंनें मातृत्व के लिए दुख सहा है,'' तो मेरे कहने का यह अर्थ है कि वे सब जिन्होंने दुख सहा है माताएं हैं। दुख सहना मात्रित्व का *प्रमाण* नहीं बल्कि माता होने का जिसमें (बच्चों के जनने की पीड़ा भी है *परिणाम* है)। मैंने यह बात इसलिए कही, क्योंकि कुछ गुटों के अगुओं ने जोर दिया है कि अगुवे के सताए जाने का इस बात का प्रमाण है कि वे परमेश्वर के अभिषिक्त हैं। यीशु ने यह नहीं कहा कि ''धन्य हैं वे जो सताए जाते हैं क्योंकि वे अप्रिय, अत्याचारी या घिनौने हैं।''

यीशु ने तो यह कहा कि ''धन्य हैं वे जो *धर्म के कारण सताए जाते हैं*।'' अपने मन में उसको याद करें जो इस शृंखला में पहले पाठ के बारे में मैंने कहा था: मैं परमेश्वर के धर्मी स्वभाव की बात कर सकता हूं; इसका अर्थ प्रभु द्वारा धर्मी ठहराया जाना हो सकता है; इसका अर्थ धार्मिक जीवन हो सकता है। जिससे हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि यीशु परमेश्वर के बालक होने के लिए सताए जाने की बात कर रहा था वह वैसे जीवन बिताने की कोशिश करता है जैसे पिता ने कहा। परन्तु यीशु ने इस पर आयत 11 से भी आसान शब्दों में इसे कहा। वहां उसने कहा, ''धन्य हो तुम, जब मनुष्य *मेरे कारण* तुम्हारी निन्दा करें, और सताएं'' (मत्ती 5:11)। लूका में समानान्तर वचन में उसने कहा, ''धन्य हो तुम, *जब मनुष्य के पुत्र के कारण* लोग तुम से बैर करेंगे'' (6:22)। यीशु उस सताव की बात कर रहा था जो उसके पीछे चलने और उसके जैसे बनने की कोशिश करने पर आता है। याद रखें कि उसने कहा, ''यदि उन्होंने मुझे सताया, तो तुम्हें भी सताएंगे।'' पतरस ने लिखा कि ''मसीही होने के कारण [यानी जो मसीह का है] दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिए परमेश्वर की महिमा करे'' (1 पतरस 4:16)।

केवल यीशु ने ही यह ज़ोर नहीं दिया कि हम प्रभु के वफ़ादार होने पर सताव का पूर्वानुमान

लगा सकते हैं। पौलुस ने तीमुथियुस को बताया कि ''जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे'' (2 तीमुथियुस 3:12; देखें प्रेरितों 14:22)। जैसे हवा में ऊपर कोई चीज़ फैंके जाने पर पक्का है कि वह नीचे ही आएगी, वैसे ही यह आत्मिक सच्चाई है कि जो लोग मसीह यीशु में भक्तिपूर्ण जीवन बिताने के इच्छुक हैं वे सभी *सताए* जाएंगे। यीशु और पौलुस के अनुसार यदि हम ने सताव की शारीरिक या गुणात्मक मान नहीं सही तो, तो अपने आप को जांच लेना बेहतर है कि क्या हम *सचमुच में* ''मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं''? मसीह के साथ जीवन बिताने के इच्छुक लोगों के लिए तनाव यकीनी क्यों है? सही और गलत के बीच में यानी अच्छाई और बुराई के बीच में सताव रहता ही है। यीशु ने कहा कि ''ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे। क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि उसके कामों पर दोष लगाया जाए'' (यूहन्ना 3:19, 20)। बुराई की शक्तियां निरन्तर धार्मिक शक्तियों से युद्ध करती रहती हैं (देखें इफिसियों 6:10-17)। इस कारण सच्चाई के लिए ईमानदारी से खड़े होने वाले लोग सताव की उम्मीद कर सकते हैं। शैतान के आगे झुकने से इनकार करने वाले लोग उसके हाथों से बुरे व्यवहार की उम्मीद कर सकते हैं।

सताव: क्या?

अपने चेलों को सताव के लिए तैयार करने में सहायता के लिए यीशु ने उन्हें सताव के रूपों के बारे में बताया था जो होने थे: ''धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी *निन्दा* करें, और सताएं और *झूठ बोल-बोल कर* तुम्हारे विरोध में *सब प्रकार की बुरी बातें कहें*'' (मत्ती 5:11)। समानान्तर हवाले में मैदानी उपदेश में उसने कहा, ''धन्य हो तुम, जब मनुष्य के पुत्र के कारण लोग तुम से *बैर* करेंगे, और तुम्हें *निकाल देंगे,* और तुम्हारी *निन्दा* करेंगे, और तुम्हारा *नाम बुरा जानकर* काट देंगे'' (लूका 6:22)। इन दोनों आयतों में यीशु ने सताव के कम से कम पांच प्रकार बताए।

(1) *घृणा।* लूका 6 में यीशु ने एक समय की बात की ''जब लोग तुम से बैर करेंगे'' लोग तुम से बैर क्यों करेंगे? वे तुम से बैर इस कारण कर सकते हैं कि उन्हें उस परिवर्तन की समझ नहीं आती जो तुम्हारे जीवन में हुआ है। मेरे ध्यान में वह समय आता है जब मैंने एक धनवान का बपतिस्मा दिया था, जो कालेज में अच्छा फुटबाल खिलाड़ी था। बपतिस्मे के पानी में से बाहर आते हुए वह जोश से उछल रहा था। वह अपने मित्रों को बताने के लिए उतावला था। थोड़ी देर के बाद उसने आकर मुझे बहुत निराश कर दिया। उसके ''मित्रों'' ने उसके मन परिवर्तन पर खुश होने के बजाय उसके निर्णय पर उसका मज़ाक उड़ाया था। मैंने उसे 1 पतरस 4:4 दिखाया: ''... वे अचम्भा करते हैं, कि तुम ऐसे भारी लुचपन में उनका साथ नहीं देते, और इसलिए वे बुरा भला कहते हैं।''

एक और कारण जो तुम से घृणा किए जाने का हो सकता है वह यह है कि तुम्हारे जीवन को देखकर उन्हें अपने आप में शर्म महसूस होती है। जैसे कोई पश्चात्तापी व्यक्ति पश्चात्ताप न करने वालों पर अपने कामों के द्वारा दोष लगाता है (देखें मत्ती 12:41), वैसे ही भक्तिपूर्ण जीवन बिताने वाले लोग अपने जीवनों के द्वारा अधर्मियों को ''दोषी ठहराते'' हैं। संसार के लोग

उन से नाराज होते हैं, जिनके मानक उनके मानकों से ऊपर हैं।

(2) *निकालना।* लूका 6 में यीशु ने आगे तब की बात की ''जब लोग ... तुम्हें निकाल देंगे।'' KJV में है वे तुम्हें अपनी संगति में अलग कर देंगे। बहुत से मसीही लोगों को समाज से निकाल दिया जाता था। वे उस समय के मूर्तियों को समर्पित पर्वों में भाग नहीं ले सकते थे। कइयों को नौकरी से हाथ धोना पड़ता। मसीही बनने वाले कई लोगों को अपने परिवारों से निकाल दिया जाता। मत्ती 10 में यीशु ने दिल दहला देने वाले ये शब्द कहे:

> यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने को आया हूं। मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलाने आया हूं। मैं तो आया हूं कि मनुष्य को उसके पिता से, और बेटी को उसकी मां से, और बहू को उसकी सास से अलग कर दूं। मनुष्य के बैरी उसके घर ही के लोग होंगे (आयतें 34-36)।

मसीह के आने का एक मकसद ''पृथ्वी पर मिलाप कराना''[5] था पर उसे मालूम था कि सुसमाचार से हर घर में मेल-मिलाप या शान्ति नहीं आएगी। कई घरों में कुछ लोगों द्वारा सुसमाचार को स्वीकार करने और अन्यों द्वारा इसे नकारने के कारण तलवार चल जानी थी। बहुत से लोग जो इन पाठों का अध्ययन कर रहे हैं इस पर मुझ से बेहतर समझ रखते हैं। मैं उनकी बात कर रहा हूं जिन्हें मसीह के पीछे चलने का निर्णय लेने के कारण अपने घरों से निकाल दिया गया है।

अमेरिका में भी जहां लोग धार्मिक स्वतन्त्रता को महत्व देते हैं, निकाला जाना होता है। शायद मसीही नवयुवाओं से बढ़कर कोई इसे नहीं समझता जो अपने हमजोलियों द्वारा स्वीकारे जाने की इच्छा करते हैं पर आम तौर पर वे भीड़ के साथ चलने से इनकार के कारण अपने आप को ''बाहर'' पाते हैं (देखें निर्गमन 23:2क)।

(3) *निन्दा।* मत्ती और लूका दोनों के विवरणों में ''तुम्हारी निन्दा करेंगे'' शब्द हैं। यीशु की भी निन्दा की गई थी। उसके वैरी उसे ''पेटू पियक्कड़ मनुष्य'' कहते थे (मत्ती 11:19) और यह कि ''उसमें दुष्टात्मा है'' (यूहन्ना 10:20; देखें 8:48)। यदि यीशु का अपमान हुआ तो हमें अपना अपमान होने पर चकित नहीं होना चाहिए। जब हमारा अपमान या निन्दा होती है तो दुख होता है। जीभ से तेज़ कोई तलवार नहीं है। जब हम बच्चे थे तो हम में से कइयों ने सीखा था: ''डंडों और पत्थरों से मेरी हड्डियां टूट सकती हैं, पर बातों से मुझे कभी घाव नहीं होता।'' बड़े होने हम ने सीखा है कि बातों के घाव लाठी और पत्थर के घाव से बड़े हैं। लाठी और पत्थर तो केवल हड्डियां और मांस को तोड़ सकते हैं पर बातों से दिल टूट जाता है और मन खेदित होता है।

(4) *नाम बुरा जानना और बदनामी।* इसका सीधा सम्बन्ध अपमान से है। मत्ती के विवरण में ''तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बातें'' हैं जबकि लूका हमें ''तुम्हारा नाम बुरा जानकर'' है। जब कोई सही काम करने की कोशिश करता है तो दूसरों के लिए उसकी बदनामी करना[6] कोई नई बात नहीं है। जब यूसुफ़ ने पोतीपर की पत्नी के साथ व्यभिचार करने से इनकार कर दिया तो उसका कहना था कि उसने उसे फुसलाने की कोशिश की है (देखें उत्पत्ति 39:6ख-18)। याकूब ने अपने मसीही पाठकों से पूछा, ''क्या वे उस उत्तम नाम[6] की निन्दा नहीं करते जिसके तुम कहलाए जाते हो?'' (याकूब 2:7)। यदि आप ''बाइबल की बातों

को बाइबल के तरीके से करने'' पर जोर देते हैं तो आपको ''तंग सोच वाले'' या ''विधिज्ञ'' या यहां तक कि ''कठोर और भावना रहित'' कहा जा सकता है।[7] बदनामी से दुख हो सकता है, पर यह मत भूलें कि यीशु ने मैदानी उपदेश में ये शब्द भी कहे: ''हाय, तुम पर; जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें, क्योंकि उन के बापदादे झूठे भविष्यवक्ताओं के साथ भी ऐसा ही किया करते थे'' (लूका 6:26)।

हमें यहां पर सन्तुलन की आवश्यकता पर विचार करने के लिए रुकना चाहिए। समाज में अच्छा नाम बनाने की इच्छुक मण्डली में कोई बुराई नहीं है। यीशु भी ''मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया'' (लूका 2:52)। परन्तु जब ऐसी इच्छा सच्चाई के लिए खड़े होने पर हावी हो जाए तो हमारा जोर गलत बात पर हो जाता है। यह न भूलें कि यीशु ने कहा, ''हाय, तुम पर जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें।''

(5) *बेलगाम सताव।* मत्ती के विवरण में ''सताए जाते'' या ''सताएं'' शब्दों का इस्तेमाल तीन बार हुआ है (आयतें 10-12)। ये शब्द *dioko* से लिया गया है जिसका अर्थ ''लगे रहना है।''[8] एक लेखक ने कहा कि मत्ती 5:10 वाले शब्द का अर्थ ''परेशान किए जाने वाले, शिकार बनाए गए, [नष्ट किए गए] है। सही ढंग से इस्तेमाल किए जाने पर ये शब्द शिकारियों द्वारा जंगली जानवरों का पीछा करने पर है।''[9] आरम्भिक मसीही लोगों पर ऐसा लगता था जैसे ''शिकारियों द्वारा जंगली जानवरों का पीछा किया जाता है'' क्योंकि उनकी सम्पत्ति छीन ली जाती है, क्योंकि उन्हें जेल में डाल दिया जाता और उन्हें सताया जाता था और उन में से कइयों को मार दिया जाता था।

सताव: कौन?

यीशु ने चाहा कि ऐसे सताव आने पर उसके चेलों को समझ हो कि वे धर्म के कारण सताए जाने वालों में पहले नहीं होंगे। सताए जाने पर उनकी संगति में अच्छे लोग होने थे, ''इसलिए कि उन्होंने उन भविष्यवक्ताओं को जो तुम से पहिले थे इसी रीति से सताया था'' (मत्ती 5:12)। सताव की श्रेणियों पर ध्यान करें जिनका पहले उल्लेख हुआ है।

(1) *बैर।* भविष्यवक्ता सताए जाने वालों में प्रसिद्ध लोग नहीं थे। इस्राएल के राजा अहाब ने मीकायाह भविष्यवक्ता के विषय में कहा, ''मैं उस से घृणा करता हूं; क्योंकि वह मेरे विषय में कभी कल्याण की नहीं, सदा हानि ही की नबूवत करता है'' (2 इतिहास 18:7)।

(2) *निकाला जाना।* भविष्यवक्ताओं को अपनी गुमनामी के कारण कई बार अलगाव में रहना पड़ता था (देखें 1 राजाओं 17:1-7)।

(3) *निन्दा।* राजा अहाब ने एलिय्याह को ''इस्राएल के सताने वाले क्या तू ही है'' कहा (1 राजाओं 18:17)। यदि आप वचन के सम्बन्ध में अपने विश्वास से समझौता करने से इनकार करते हैं तो आपको भी परेशानी पैदा करने वाला ही कहा जाएगा। परन्तु एलिय्याह के जवाब को दखें ''मैं ने इस्राएल को कष्ट नहीं दिया, परन्तु तू ही ने और तेरे पिता के घराने ने दिया है; क्योंकि तुम यहोवा की आज्ञाओ को टालकर बाल [मूर्तियों के देवताओं] की उपासना करने लगे'' (आयत 18)।

(4) *नाम बुरा जानना और बदनामी।* जब दानिय्येल परमेश्वर से प्रार्थना करना जारी रखा,

तो अन्य सरकारी अधिकारियों ने उस पर राजा के साथ गद्दारी करने का आरोप लगाया (देखें दानिय्येल 6:1-15)।

(5) *शारीरिक सताव।* यिर्मयाह को पीटा गया था (यिर्मयाह 20:2) हनन्याह को जेल में डाल गया था (2 इतिहास 16:7, 10)। जकर्याह को पथराव किया गया था (2 इतिहास 24:21)। यहूदी परम्परा के अनुसार यशायाह को लकड़ी के एक बड़े खोल के अन्दर डालकर बीच में से चीरा गया था (देखें इब्रानियों 11:37)।

जब यीशु ने उदाहरण के रूप में पुराने नबियों का इस्तेमाल किया तो वह अपने चेलों को यह यकीन दिला रहा था कि सताया जाना परमेश्वर की अस्वीकृति का प्रतीक नहीं है, क्योंकि जो लोग परमेश्वर से प्रेम करते थे उन्होंने दुख सहा था और अभी भी दुख सह रहे थे। सताव व्यक्ति को विश्वासियों के भाईचारे में ले आता है। यीशु ने स्वयं दुख सहा, ''... मसीह भी तुम्हारे लिए दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श दे गया है, कि तुम भी उसके चिह्न पर चलो'' (1 पतरस 2:21)। यीशु के प्रतिों ने भी दुख सहा। उसने याकूब और यूहन्ना को बताया कि वे दुखों के कटोरे को पीएंगे और दुखों के चश्मे में डुबोए जाएंगे (मरकुस 10:39)। याकूब मरने वाला सबसे पहला प्रेरित था जिसकी हत्या 44 ईस्वी के लगभग हेरोदेस की तलवार से हुई (देखें प्रेरितों 12:1, 2)। यूहन्ना को पतमुस के टापू पर देश निकाला दिया गया था (देखें प्रकाशितवाक्य 1:9)।[10] अन्य प्रेरितों के साथ क्या हुआ हम पक्का नहीं बता सकते, पर उनकी मृत्यु के सम्बन्ध में कुछ मानवीय परम्पराएं इस प्रकार हैं:[11]

- पतरस-क्रूस पर उलटा लटकाया गया।
- अन्द्रियास-एदेसा के क्रूस पर शहीद हुआ।
- फिलिप्पुस-कोड़े मारकर, जेल में डाला गया और फिर हियरापुलिस में क्रूस पर चढ़ाया गया।
- बरतुल्मै-पीटा गया और फिर क्रूस पर चढ़ाया गया।
- थोमा-भाला मारकर हत्या की गई।
- मत्ती-इथोपिया में तलवार से काटा गया।
- हल्फई का पुत्र याकूब-मिस्र में शहीद हुआ।
- थद्दई-क्रूस पर चढ़ाया गया।
- शमौन जेलोतेस-क्रूस पर चढ़ाया गया।
- मत्तियाह-पथराव किया गया और फिर पथराव करके सिर कलम कर दिया गया।
- पौलुस-रोम में सिर कलम किया गया।[12]

आरम्भिक मसीही मसीह की खातिर दुख सहने वालों के इस भाईचारे का भाग थे। रोमी सम्राट नीरो मसीही लोगों को जंगली जानवरों की खालों में सिलवा देता और उन पर कुत्ते छोड़ देता था। वह उन्हें मोम से अकड़े कुरते पहनाता, और उन्हें खम्भों के साथ बांध देता और फिर आग लगा देता था। जब मैं अपने परिवार के साथ रोम में गया था तो मैं उस पहाड़ी पर खड़ा हुआ था जहां नीरो अपने पर्वों में रौशनी करने के लिए मशाल के रूप में जलते जुए मसीही लोगों का इस्तेमाल करता था। सम्राट डोमिशयन का आदेश था ''किसी मसीही को, अदालत के सामने

लाए जाने पर, अपना धर्म छोड़े बिना दण्ड से छूट न दी जाए।''[13] आरम्भिक मसीही लोगों पर होने वाले तरह-तरह के सताव और अत्याचार इतने दिल दहला देने वाले हैं कि मैं स्वयं उनकी बात नहीं कर सकता। इतना कह देना ही काफ़ी है कि अपने विश्वास का इनकार करने से इनकार कर देने के कारण उन्हें बहुत और भयंकर दुख सहना पड़ा।[14]

सताव आज भी होता है। कई देशों में दूसरे लोगों को मसीही बनने के लिए प्रोत्साहित करना अवैध है। धार्मिक स्वतन्त्रता वाले देशों में भी, बैर, आलोचना, अपमान, बदनामी, निन्दा से सूक्ष्म सताव होते हैं।[15] यह बात कुछ लोगों को शारीरिक सताव से भी प्रभावित करती है। यदि उन्हें मसीह का इनकार करने या मरने की चुनौती दी जाए, तो वे मरना पसन्द करेंगे। परन्तु जब तिल-तिल कर मरना पड़ता है तो यह कैंसर की तरह उनके विश्वास और धीरज को खा जाता है।

चाहे जो भी रूप ले, यदि आप प्रभु के वफ़ादार हैं, तो सताव तो होना ही होना है। हमारे वचन पाठ का एक संदेश यही है।

आप फिर भी खुश हो सकते हैं

हमारे वचन पाठ का दूसरा संदेश यह है कि सताव के निश्चित होने के बावजूद आप आनन्दित और प्रसन्न हो सकते हैं। यीशु ने कहा, ''आनन्दित और मगन होना।'' समानान्तर आयत में उसने कहा कि ''उस दिन आनन्दित होकर उछलना'' (लूका 6:23क)। जिसने उसे यह शब्द कहते हुए सुना था उसने बाद में लिखा, ''और यदि तुम धर्म के कारण दुख भी उठाओ, तो धन्य हो; पर उनके डराने से मत डरो, और न घबराओ। पर मसीह को प्रभु जानकर अपने अपने मन में पवित्र समझो'' (1 पतरस 3:14, 15क; देखें 4:16)। दुर्व्यवहार किए जाने पर आनन्द करना आसान नहीं है, पर प्रसन्नता के विषय की मूल बात यही है। यदि हम प्रसन्न होना चाहते हैं तो हमें परेशानियों में भी प्रसन्न होना सीखना पड़ेगा।

जब प्रेरितों को पीटा गया और प्रचार न करने का आदेश दिया गया (प्रेरितों 5:40) तो वे ''वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के साम्हने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिए निरादर होने के योग्य तो ठहरे'' (आयत 41)। अपने ऊपर तरस खाने के बजाय वे ''प्रतिदिन मन्दिर में और घर-घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रुके'' (आयत 42)। जब पौलुस और सीलास को पीटा गया और फिलिप्पी की कैद में डाल दिया गया, तो शिकायत करने के बजाय उन्होंने अपनी जेल की कोठरी को प्रार्थनाओं और परमेश्वर की स्तुति के भजनों से भर दिया (प्रेरितों 16:25)। कहते हैं कि आरम्भिक मसीही शहीद भजन गाते हुए मौत को गले लगाते थे। जब सम्माननीय पोलिकार्प को यीशु में अपने विश्वास को त्याग देने या मरने के लिए परखा गया, तो उसका जवाब था, ''अस्सी और छह साल मैंने उसकी सेवा की, और उसने मुझे कभी दुख नहीं दिया; तो मैं अपने राजा की निन्दा कैसे करूं, जिसने मुझे बचाया है?''[16]

आनन्द क्यों करें?

हम में से कइयों को यह समझना कठिन है कि सताव आने पर ''आनन्दित और मगन'' कैसे हो सकते हैं। इस बात को मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि यीशु के कहने का अर्थ यह नहीं

था कि हमें सताव की इच्छा करनी चाहिए या केवल इसलिए प्रसन्न होना चाहिए कि हम सताए गए हैं। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा है कि यीशु स्वयं ''उस आनन्द के लिए जो उसके आगे धरा था, *लज्जा की कुछ चिन्ता न करके,* क्रूस पर दुख सहा'' (इब्रानियों 12:2)। तो फिर हम ''धर्म के लिए'' सताए जाने पर आनन्द क्यों करें? मैं कुछ सुझाव देना चाहता हूं।

उसके कारण जो सताव से हमें मिल सकता है। सताव से अवसर मिल सकते हैं। सताव के कई रूप हमारे लिए आत्मिक रूप में बढ़ने का अवसर दे सकते हैं। याकूब ने लिखा:

> हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इस को पूरे आनन्द के साथ समझो, यह जानकर, कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो, कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ और तुम में किसी बात की घटी न रहे (याकूब 1:2–4; देखें रोमियों 5:3, 4)।

सताव से न केवल हमारा आत्मिक विकास हो सकता है बल्कि यह परमेश्वर के लिए हमारी आवश्यकता से हमें अवगत करवा कर आश्रय के लिए उसकी ओर ले जा सकता है। पौलुस ने अपना जीवन प्रभु को दे दिया था, जिस कारण वह लिख पाया, ''... जब मैं निर्बल होता हूं, तभी बलवन्त होता हूं'' (2 कुरिन्थियों 12:10; देखें आयत 9)।

सताव से एक और अवसर जो हमें मिल सकता है वह मसीह जैसे मन को दिखने का असर है। यीशु गालियां दिए जाने [जबानी हमला होने] पर, ''गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था'' (1 पतरस 2:23)। हमें उसके नमूने का अनुसरण करने की चुनौती दी जाती है: ''लोग बुरा कहते हैं, हम आशीष देते हैं; वे सताते हैं, हम सहते हैं'' (1 कुरिन्थियों 4:12ख)।[17]

सताव जो कुछ दिखा सकता है उसके कारण। सताव से संकेत मिल सकता है कि हम यीशु के पीछे चल रहे हैं।[18] प्रेरितों की तरह हम आनन्द कर सकते हैं क्योंकि हम ''उसके नाम के कारण लज्जित होने के योग्य'' गिने जाते हैं (प्रेरितों 5:41)। परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि वह हमें हमारी सामर्थ से बाहर परीक्षा में नहीं पड़ने देगा (1 कुरिन्थियों 10:13)। कहते हैं कि सताव से हमारे मन में प्रभु के उच्च विचार प्रगट हो सकते हैं; उसे यकीन है कि उसकी सहायता से हम सह सकते हैं। सताव से यह संकेत मिल सकता है कि हम मसीह की सेवा में लगे हुए हैं। शैतान और उसके चेलों को उन से जिन से उन्हें कोई ख़तरा कोई परेशानी नहीं है।

तो फिर जब हम परमेश्वर की सहायता से सताव में से निकल आते हैं, तो हम आनन्द कर सकते हैं कि हम ने परीक्षा पास कर ली। ध्यान दें कि यीशु ने कहा, ''धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए *जाते हैं*''[19] (मत्ती 5:10ख)। विशेष जोर उन पर दिया गया है जिन्होंने सताव के बड़े तूफ़ान को झेला है और अब भी कायम खड़े हैं। ये वफ़ादार लोग यकीनन आनन्दित हो सकते हैं।

सताव से यह संकेत मिलने के कारण कि हम किधर जा रहे हैं। सताए जाने पर आनन्दित होने का एक कारण उस प्रतिज्ञा से मिलता है जिसमें कहा गया है कि यदि हम कायम रहे तो ''क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं कहा है'' (मत्ती 5:10)। मैं ''राज्य'' शब्द यानी उस क्षेत्र पर ज़ोर देना चाहता हूं जिस पर परमेश्वर शासन करता है। सताव इस बात का प्रमाण हो सकता है

कि आप ने सचमुच में परमेश्वर को अपने मन के सिंहासन में बिठा लिया है। यह जानते हुए कि हम परमेश्वर के राज्य का भाग हैं इस जीवन में उसकी प्रतिज्ञा का आंशिक रूप में पूरा होना है।

परन्तु इस धन्य वचन में ध्यान आने वाले जीवन पर है। आयत 12क में यीशु ने आगे कहा ''आनन्दित और मगन होना क्योंकि तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा फल है'' (देखें लूका 6:23क)। इस जीवन में हमारा प्रतिफल काफ़ी है और हमारी आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं, पर स्वर्ग में हमारा प्रतिफल *बड़ा* होगा। यदि आपको सब वस्तुओं की हानी भी उठानी पड़े तौभी आप जान सकते हैं कि परमेश्वर ने आपके लिए एक स्वर्गीय राज्य तैयार किया है। जीवन में चाहे जो भी हो जाए, हमें वह आशा मिली है जो ''हमारे प्राण के लिए ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है'' (इब्रानियों 6:19; देखें रोमियों 5:3, 4)।

सारांश

हम धन्य वचनों के अन्त में आ गए हैं। इस बड़े वचन ने हमें परमेश्वर के लिए अपनी आवश्यकता का अहसास करने, अपनी कमियों पर शोक मनाने, प्रभु के आगे अपने आपको झुकाने और भूख से तड़प रहे व्यक्ति के रूप में परमेश्वर और उसके मार्ग की लालसा करने की चुनौती दी गई है। हमें बताया गया है कि मसीह के पीछे चलने वाला व्यक्ति दयावंत होगा, शुद्ध मन वाला होगा और मेल कराने वाले के रूप में कार्य करेगा। अब हमें यह भी बताया गया है कि ऐसे काम करने वाला व्यक्ति संसार से सताव की उम्मीद रख सकता है जिसे समझ नहीं है और न समझ सकता है। ''परन्तु'' एक अर्थ में यीशु ने कहा, ''कोई बात नहीं क्योंकि परमेश्वर आपकी सहायता करेगा। और यदि आप स्थिर रहते हैं तो आपको यहां और वहां दोनों जगह आशीष मिलेगी।''

> आरम्भिक मसीही लोगों को आठवां धन्य वचन पसन्द था ...। इससे उन्हें अत्यधिक हिंसा में भी मुस्कुराने का कारण मिल गया। यह प्रतिदिन का दिलासा था, क्योंकि उन्हें पता था कि ''राज्य'' उनका है और ''स्वर्ग में'' उनके लिए बड़ा प्रतिफल है। अंदरूनी मज़बूती और आत्मिक विकास की आशीष के रूप में प्रभु के वचन की आशीष से उन्हें ''सताव की बड़ी [उलझन]'' को सहने की सामर्थ मिलती थी [इब्रानियों 10:32]।[20]

आज यीशु हम से वैसे ही पूछ रहा है जैसे बहुत पहले उसने याकूब और यूहन्ना से पूछा था कि हम दुख के उस कटोरे को पी सकते हैं या नहीं जो उसने पीया और दुख के बपतिस्मे में बपतिस्मा ले सकते हैं या नहीं जो उसने सहा। मेरी प्रार्थना यह है कि आप धर्म के लिए खड़े होकर ''धर्म के लिए'' यानी यीशु के लिए जियोगे। यदि आप ऐसा करते हैं, तो ''बड़े क्लेश उठाकर'' (प्रेरितों 14:22) आपको एक दिन आत्मा के घर में प्रवेश मिलेगा।

टिप्पणियां

[1]ह्यूगो मेकोर्ड, *हैप्पीनेस गारंटिड* (मरफ़्रीस्बोरो, टेनिसी: डिहॉफ़ पब्लिकेशंस, 1956), 54. [2]किसी *के बारे में* बात करते समय ''अन्य पुरुष'' अर्थात ''वह'' या ''वे'' का इस्तेमाल किया जाता है। [3]किसी *से* बात करने पर ''मध्यम पुरुष'' (''तुम/तुम्हारा'') का इस्तेमाल किया जाता है। [4]इससे मिलता-जुलता शब्द ''शहीद की स्थापना''

है। [5]यह मुख्यतया '' 'जैसा बाप, वैसा बेटा'? '' वाला पिछला पाठ देखें। [6]''उत्तम नाम'' मसीह है। जब हम *मसीही* कहलाते हैं तो हम मसीह के नाम को आदर दे रहे होते हैं और घोषणा कर रहे होते हैं कि हम उसके हैं। [7]सच्चाई के लिए स्थिर रहने की कोशिश करने वालों पर अपमान और बदनामी हर जगह अलग ढंग से होती है। जहां आप रहते हैं उसे अनुसार इसे बदलकर विस्तार दें। [8]डब्ल्यू. ई. वाइन. मैरिल एफ. अंगर एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्पोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 468. [9]जॉन जैकब वेटस्टाइन (1693–1754); ए. लुकियन विलियम्स, ''सेंट मैथ्यू,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक 15, संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एंड जोसेफ एस. एक्सेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 150 में उद्धृत। [10]मानवीय परम्परा के अनुसार, डोमिशियन की मृत्यु के पश्चात यूहन्ना इफिसुस में लौट आया जहां बाद में उसकी मृत्यु हो गई।

[11]परम्पराएं अलग अलग हैं। अधिकतर परम्पराएं जॉन फोक्स, *फोक्स'स बुक ऑफ मार्टियर्स,* संपा. विलियम बेयरन फोरब्रश (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1926). [12]2 तीमुथियुस 4:6 में पौलुस की मृत्यु का पूर्वानुमान है। [13]फोक्स, 6. [14]जानकारी का एक स्रोत जेम्स एम. टोल्ले, *दि बीटीट्यूड्स* (फुलर्टन, कैलिफोर्निया: टोल्ले पब्लिकेशंस, 1966), 75 है। [15]आप अपने समाज में लागू होने वाले उदाहरण डाल सकते हैं। अमेरिका में मीडिया लगातार उनका मज़ाक उड़ाता है जिन्हें ''फंडामैंटेलिस्ट'' कहा जाता है। हाल ही की एक घटना में, एक समाचार कार्यक्रम में मसीह की कलीसियाओं को एक ''कल्ट'' बताया गया। [16]फोक्स, 9. [17]1 कुरिन्थियों 4:12 में पौलुस अपनी ही बात कर रहा था, पर कहीं और उसने अपने पाठकों को मसीह मसीह का अनुकरण करने की चुनौती दी जैसे वह करता है (1 कुरिन्थियों 11:1)। [18]जैसा कि पहले कहा गया है सताव शिष्य होने का प्रमाण नहीं बल्कि परिणाम है। इसलिए मैं इस भाग में ''संकेत दे *सकता,*'' ''प्रगट कर *सकता*'' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करता हूं। [19]KJV ''जो सताए जाते हैं'' है। यूनानी धर्मशास्त्र में पूर्णकाल है जो वर्तमान में जारी *अतीत के* कार्य का संकेत देता है। [20]मेकोर्ड, 58.